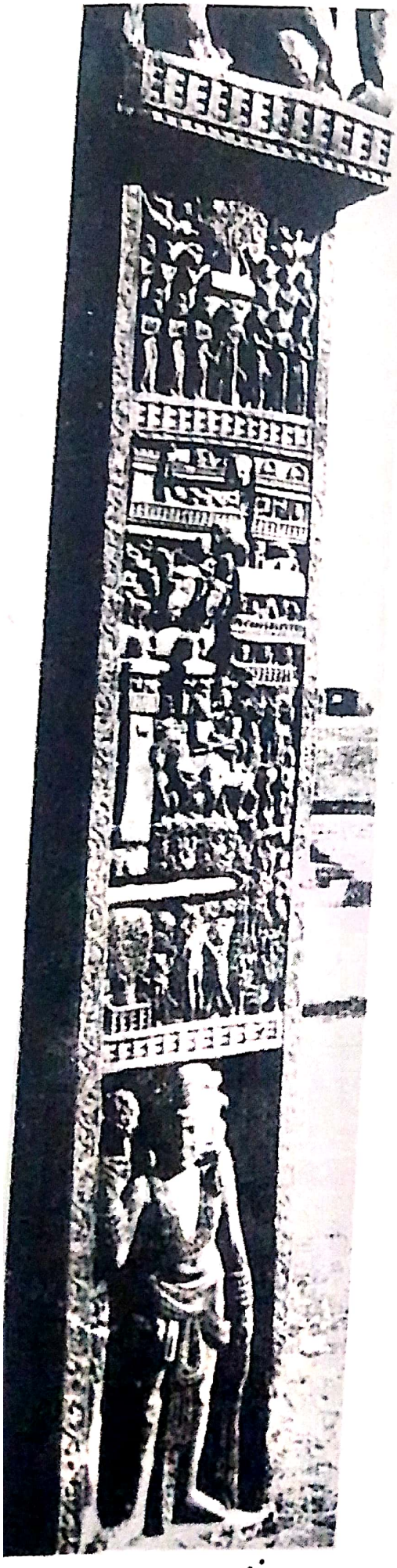

भारतीय कला

(प्रारंभिक युग से तीसरी शती ईसवी तक)

लेखक

वासुदेवशरण अग्रवाल

संपादक

डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल

अध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृथिवी प्रकाशन

वाराणसी-२२१००५

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-939405-0-1

प्रकाशक -
देवकुमार अग्रवाल
पृथिवी प्रकाशन
एन. १/५४, अमेठी कोठी,
नगवा, वाराणसी-२२१००५
सम्पर्क - 9451574031

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
प्रथम संस्करण : १९६६
द्वितीय परिवर्धित संस्करण : १९७७
पुनर्मुद्रण : २०१५
पुनर्मुद्रण : २०२०

प्रकाशक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित
पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना समालोचन-विषयों के अतिरिक्त अन्य किसी भी रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

मुद्रक -
रेनबो प्रिंटर्स
विश्वनाथपुरी कालोनी के सामने
सिगरा-सिद्धगिरीबाग, सिगरा, वाराणसी-221010
मो0 9161430005

Scanned with OKEN Scanner

विषय सूची

लेखक की भूमिका		४–१०
मुखचित्र		पृष्ठ १ के सामने
फलक चित्रों का परिचय		
अध्याय १	आरम्भिक अवलोकन	१–८
अध्याय २	प्राग् ऐतिहासिक युग	९–१४
अध्याय ३	सिंधुघाटी की कला	१५–४७
अध्याय ४ (अ).	वैदिक कला और शिल्प	४८–५४
(आ).	कला में वैदिक प्रतीक	५५–६५
अध्याय ५ (अ).	महाजनपद युग की कला	६६–७५
(आ).	आहत मुद्राओं पर रूप या चिह्न	७५–७७
(इ).	भारत और जम्बूद्वीप की कला	७७–८६
अध्याय ६	शैशुनाग-नंद युग की कला	८७–९८
अध्याय ७	मौर्य कला	९८–१३०
अध्याय ८	शुंग कला	१३१–१८६
अध्याय ९	दरीगृह या पर्वत में उत्कीर्ण गुहावास्तु	
(अ).	उदयगिरि और खंडगिरि की गुफाएं	१८७–१९५
(आ).	बौद्ध पर्वतीय चैत्यगृह और विहार	२१६–२२१
अध्याय १०	मथुरा की शुंग और कुषाण कला	२२२–२७३
अध्याय ११	गंधार कला	२७४–२९१
अध्याय १२	आंध्र-सातवाहन युग के स्तूप	२९२–३२०
अध्याय १३	भारतीय मृण्मय मूर्तियाँ	३२१–३३५
अध्याय १४	संस्कृत युग की कला में प्रतीक और मूर्तियाँ	३३६–३४६
फलक चित्र	१–१९०	पृ० ३४६ के सामने

●●● भारतीय कला ●●●

प्रथम खण्ड

(प्रारंभिक युग से तीसरी शती ईसवी तक)

भारतीय कला में यहाँ के मस्तिष्क और हस्तकौशल का सर्वोत्तम प्रमाण पाया जाता है। भारतीय कला की सामग्री वैसी ही समृद्ध है जैसी भारतीय साहित्य, धर्म और दर्शन की।

यद्यपि भारतीय कला विश्व कला के मंच पर अपना पद काफी देर से प्राप्त कर पायी, किन्तु अब उसका सौन्दर्य और अर्थ विद्वानों और रसिकों के मन में पूरी तरह बस गया है। भारतीय कला और वास्तु के सम्बन्ध में कई इतिहास ग्रन्थ पहले लिखे जा चुके है। फर्गूसन, स्मिथ, कुमारस्वामी और परसी ब्राउन के लिखे हुए ग्रन्थ बहुगुण-विशिष्ट हैं और आज भी उनका सम्मान है। किन्तु अधिकांश वर्णनात्मक है और उनमें कला के अर्थों पर विचार प्रायः नहीं है। उनमें स्थापत्य और शिल्प का विचार अलग-अलग किया गया है। किन्तु भारतीय कला के इस नये इतिहास में विद्वान लेखक ने स्थापत्य और शिल्प दोनों का संयुक्त अध्ययन किया है जैसे कला निर्माताओं ने अपने ध्यान में उनकी एक साथ कल्पना की थी। बाह्य वर्णन ही नहीं, उसके साथ उनके भीतरी अर्थ पर विचार भी है, जिससे वस्तुतः वे कला-कृतियाँ अस्तित्व में आई थीं। इनके अतिरिक्त संस्कृत, पाली, प्राकृत आदि भाषाओं की मूल शब्दावली का भी बहुशः उपयोग है जिससे इस बात का परिचय मिलता है कि वास्तु और शिल्प के निर्माता और जनता उन्हें किन नामों से जानते थे।

हिन्दी में **भारतीय कला** का यह वृहद् इतिहास कला-अध्ययन के क्षेत्र में नया युग आरम्भ करता है। वैसे न केवल इसे हिन्दी का पहला कला-इतिहास होने का श्रेय प्राप्त है प्रत्युत इसकी उपजीव्यता निःसंदिग्ध है।

पृथिवी प्रकाशन - वाराणसी - 221005

मूल्य : ₹525/-

Scanned with OKEN Scanner

अजन्ता

अजन्ता में उत्कीर्ण चैत्यगृह और विहार वास्तु-सम्बन्धी इस आन्दोलन के उच्च शिखर पर है। उनमें चित्र, शिल्प और वास्तु विद्या सम्बन्धी दीर्घकालीन प्रयत्न व्यक्त हुआ है जिसकी अवधि बँट जाता है—पहला हीनयान (दूसरी शती ई० पू० से दूसरा शती तक) और दूसरा महायान जो दूसरी शती ई० पू० से आरम्भ होकर सातवीं शती तक लगभग एक सहस्र वर्षों की है। यह प्रयास दो युगों में पाँचवीं शती से आरम्भ होकर सातवीं शती तक जारी रहा। बीच में दो शताब्दियों का व्यवधान है। अजन्ता में कुल २९ गुफाएँ हैं, जिनमें चार चैत्यगृह और शेष २५ विहार गुफाएँ हैं। गुफा संख्या १० चैत्यगृह है, जो दूसरी शती ई० पू० का माना जाता है। यह ९६ फुट ६ इंच गहरा, और भीतर ४१ फुट ३ इंच चौड़ा तथा ३६ फुट ऊँचा है। मण्डप और प्रदक्षिणापथ के बीच में ५९ खम्भों की माला या दौड़ती हुई पंक्ति है। खम्भों के बीच की डण्डी चौकोर और कुछ भीतरी झुकाव लिए हुए है। खम्भों में ऊपरी सिरे और नीचे की पेंदी नहीं है। गर्भगृह या स्तूप भाग की छत में टेढ़ी धरन हैं जो खम्भों के मत्थों से निकली हैं। मण्डप की छत के ढोलने में भी किसी समय काष्ठशिल्प की भारी धरन लगी हुई थीं, जो अब नहीं रहीं, पर उनकी चूलों के छेद पत्थर में कटे हैं। पर्वत की कुक्षि में इस गुफा के उत्कीर्ण करने वाले स्थपति

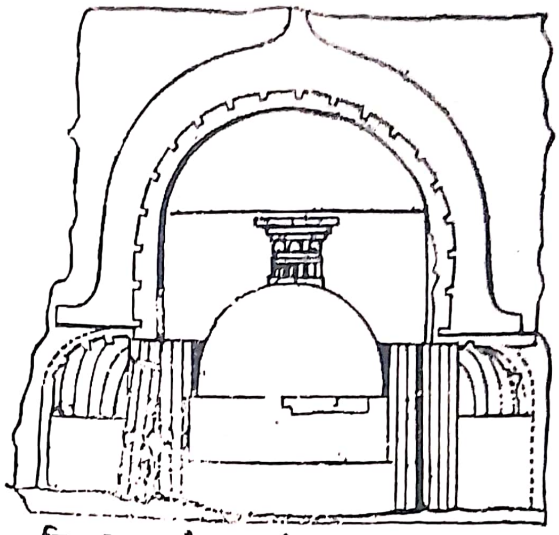

चित्र ३१८ चैत्यघर सं० १०, अजन्ता

शिल्पाचार्य शिलाकर्म में अत्यन्त दक्ष और साहसी थे। उन्होंने नाना भाँति के अलंकरणों से गुफा को सजाने में विचित्र कौशल का परिचय दिया है। गर्भगृह में उत्कीर्ण स्तूप दो भागों में है—एक गोल अधिष्ठान भाग और दूसरा उसके ऊपर लम्बा अण्ड-भाग जिससे स्तूप का कुछ विकास सूचित होता है (चित्र ३१८)।

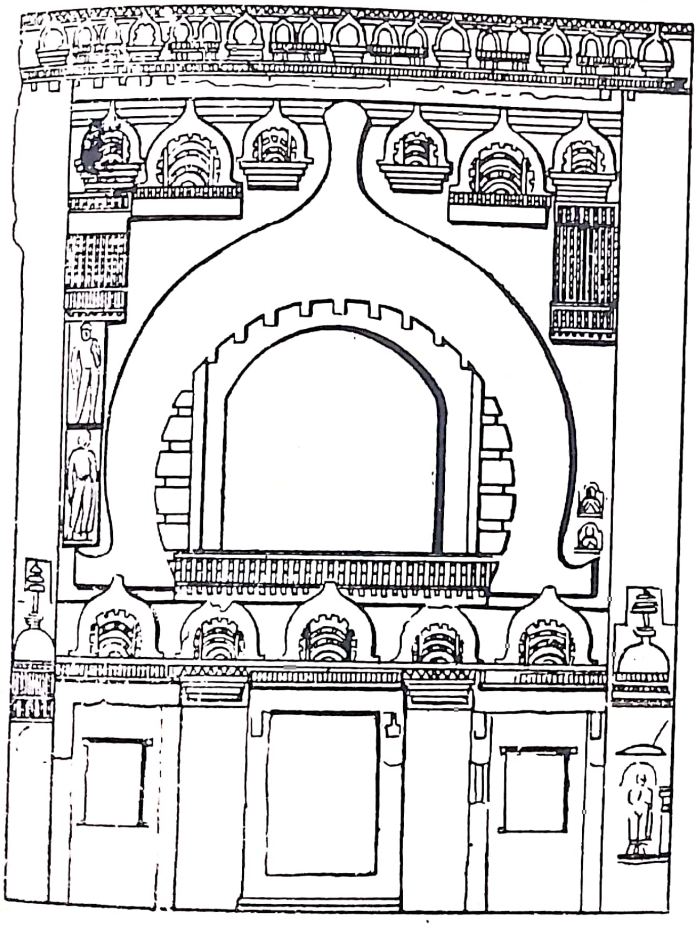

चित्र ३१९ चैत्यघर सं० ९, अजन्ता

चैत्यगृह गुफा संख्या ९ संख्या १० से छोटी है, जिसके मुख भाग में किसी प्रकार का काष्ठशिल्प नहीं पाया जाता। इसके मुखपट्ट के बीच में एक प्रवेश द्वार और दो पार्श्व गवाक्ष हैं। इन तीनों की ऊपरी बेल में छज्जा सा निकला हुआ है, जिससे उथले मुख मण्डप का आकार बन जाता है। इसके ऊपर संगीतशाला है और उसके भी ऊपर कुछ पीछे की ओर १२ फुट ऊँचा कीर्त्तिमुख या सूर्यद्वार है जो चैत्यगृह के भीतरी भाग को प्रकाश और वायु से भरने का मुख्य साधन था (चित्र ३१९)।

सामने के पर्दे पर वेदिका का अलंकरण उसी प्रकार भरा हुआ है जैसे भाजा, कोण्डाने और नासिक के घरमुखों